पाश्चात्य और इस्लामी बमबारी

- जगजीवन जोत सिंह आनन्द

इन दिनों सिख समाज सांस्कृतिक बमबारी झेल रहा है। भारत का एक सीमावर्ती क्षेत्र होने के कारण पंजाब राज्य में चल रहे षड्यंत्रों का विश्लेषण महत्वपूर्ण हो गया है। वह भी उस वक्त जब राज्य की राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक शक्ति सुप्तावस्था में हों।

एक तरफ पंजाब में अमेरिका और पाश्चात्य देशों का सांस्कृतिक-राजनैतिक कुचक्र चल रहा है, तो दूसरी ओर सीमा पार का इस्लामी षड्यंत्र अपने विकराल रूप में समाज के सामने है।

भारत के इतिहास का यथार्थ है कि राष्ट्र को गुरुओं के सिख खैबर दर्रे से होने वाले आक्रमणों से सदा के लिए मुक्त करने में सफल रहे थे। अहमदशाह अब्दाली की काबुल लौटती सेना पर घात लगाकर परास्त करने वाले खालसा पठानों के मन में भय पैदा करने में कामयाब हुए थे। यही नहीं, हरि सिंह नलुवा के नेतृत्व में पेशावर के जमरोद किले पर कब्जा करना-सिख इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। महाराजा रणजीत सिंह का लाहौर पर कब्जा कर खालसा राज की स्थापना भारतीय इतिहास की गौरवपूर्ण घटना है।

वर्तमान काल में, नये सन्दर्भों व स्थितियों में हम पाते हैं कि जिन क्षेत्रों में क्रमब) व सुसंगठित आध्यात्मिक व सांस्कृतिक क्रियाकलाप सतत् चलते है, वह क्षेत्र भारत के मूल तत्वों की रक्षा कर पाता है। जहां ऐसी श्रृंखला नहीं होती, वहां भारत द्रोही तत्वों की अरण्य स्थली बन जाती है। पंजाब का अवलोकन करने पर इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि पंजाब के तीन क्षेत्रों माझा, मालवा और दो-आबा में सिखों की बहुलता हैं। यहां सिखों के कई धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान व गुरुद्वारे है। सतत् गुरवाणी केन्द्रित धाार्मिक क्रियाओं से समाज में सक्रियता रही है। पंजाब के इस भाग की सक्रियता से भारत को सुरक्षा मिलती रही थी। आज पंजाब पर चहुँ ओर से सांस्कृतिक और राजनैतिक प्रहारों का षड्यंत्र हो रहा है।

अमेरिका और पाश्चात्य देशों के अपने भूमण्डलीय लक्ष्य है। इन देशों की बाजार शक्तियां अपने को भारतीय जीवन दर्शन और मानस के विपरीत पाती है। संयमित जीवन का आचरण खुले बाजार की अवधारणा का विरोधी है। पाश्चात्य भोगवादी सोच गुरुनानक नाम लेवा समाज की ''उठड़ीं-बैठड़ीं'' के एकदम उलट हैं। मैं और र्सि मैं का स्व:केन्द्रित बाजारु जीवन नाम जपो, किरत करो और वन्डके (बांटकर) छको से पूर्णत: भिन्न है। अत: पाश्चात्य देशों की बाजार शक्तियां लोगों के धार्मिक व सांस्कृतिक आचरण में परिवर्तन चाहती है। उसे उपभोक्ता वस्तुओं की चाह करने वाले समाज के निर्माण की जल्दी भी है। मैकाले की शिक्षा नीति देकर जवाहरलाल नेहरू पहले ही काफी गड्ढे खोद चुके हें। ऊपर से नई बाजारवादी शिक्षा नीति ने सारी कसर पूरी कर दी है। इस बाजारवादी शिक्षा ने समाज को दिया है-गुरुओं का गलत इतिहास पढ़ाना, धर्म का विषय आलोप हो जाना, अन्य सम्प्रदायों-पंथों के विवाद में पड़ने की रुचि बढ़ाना, समरसता की स्थितियों को नुकसान पहुंचाना, गरीब की पहुंच से शिक्षा को दूर करना, गांवों से पलायन करवाना। आज पंजाब का समाज पारम्परिक गुरमत शिक्षा का विरोधी होता जा रहा है। लगभग समाज ने यह मान लिया है कि अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली ही एकमात्र हल है।

समाज में भोगवादी प्रवृत्तियों को बढ़ाने का एक संगठित प्रयास हो रहा है। टी.वी. के कार्यक्रम और अश्लील विज्ञापन पंजाब की संस्कृति के लिए घातक है। गुरबाणी कीर्तन के अलावा शायद ही कोई गुरमत विचार केन्द्रित कार्यक्रम टी.वी. पर आता होगा। पंजाबी साहित्य का पठन पाठन शून्य है। नये व प्रभावी मौलिक पंजाबी साहित्य की सृजना तो दूर की बात है। हर जगह ''स्पाइस है......'' शोर है। महंगी शादियों, महंगे उत्सवों से लोक संस्कृति का ह्रास हुआ है। पदार्थों की चाह में सिख युवा बावले हो रहे है। यह सब पश्चिमी संस्कृति के संगठित कुठाराघात का परिणाम है।

जिस दिन, ईसाई मिशनरियों ने महाराजा रणजीत सिंह के पुत्र दलीप सिंह को जबरन इंग्लैण्ड ले जाकर ईसाई बनाकर धर्मान्तरित किया, तब से सिख समाज ईसाई मिशनरियों के निशाने पर है। ईसाई मिशनरियों को पश्चिमी देशों से अकूत धन की प्राप्ति होती है। पश्चिमी शक्तियों का मत है कि ईसाईकरण से सामाजिक स्थितियां पश्चिम के अनुकूल होती है। समाज का वह घटक, जो आर्थिक व सामाजिक रूप में पिछड़ गया है, उसका धर्मान्तरण आसान है। इसी लक्ष्य के साथ, ईसाई मिशनरी दलित सिखों को धर्मान्तरित करने में जुटा है। जिसका जीता-जागता प्रमाण जनपद गुरदासपुर है। पंजाब में दलितों को बड़े पैमाने पर धर्मान्तरित करने का कुचक्र ईसाई मिशनरियों द्वारा चलाया जा रहा है। सिखों में प्रचारक वर्ग की प्रभावी भूमिका न होने के कारण गुरमत के सिद्धान्तों की अनोखी व्याख्या हो रही है। स्मरण करने योग्य तथ्य यह है कि 1699 की बैसाखी पर अमृत छकने वाले 'पंज प्यारों' में तीन गुरसिख दलित थे। सामाजिक धारातल पर ईसाई मिशनरियों का विरोध नहीं होने से थोक में धर्मान्तरण का रास्ता साफ हैं। पंजाब के सीमान्त क्षेत्रों को ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्मान्तरण के लिऐ चयनित करना खतरे की घण्टी है।

पंजाब में अंग्रेजी माध्यम का हर दूसरा स्कूल ईसाई मिशनरियों द्वारा स्थापित है। इस महंगी पढ़ाई के एवज में सिख विद्यार्थी पतित-पुणे के नये नये तरीके सोखते हैं। अत: एक उच्च मध्यम वर्ग भी ईसाईयत की चपेट में है। गुरबाणी के स्थान पर 'पोयम' पढ़ने वाला यह वर्ग समाज को रसातल की ओर ले जा रहा है।

पाश्चात्य बीट पर 'भंगड़ा' तैयार हो रहा है। जिसके अश्लील बोल तरुण मन को दूषित कर रहे है। वी सी डी में नग्न नृत्य और अश्लीलता के साथ भंगड़ा वाले गीत युवाओं को धड़ल्ले से परोसे जा रहे हैं। पतित होकर नचनिया बने युवाओं की इस स्थिति पर धार्मिक संस्थाएं एवं नेतृत्व चुप है।

पश्चिमी भोगवादी संस्कृति के चलते, पंजाब के युवाओं में विदेश जाने का चस्का बढ़ा है। हर रोज कबूतरबाजी की घटनाओं के खुलासे इस बात को साबित करते हैं। किसान का बेटा पुरखों के खेत बेचकर विदेश जाना चाहता है, उसे खेती करके दसों नाखुनों की किरत कमाई नहीं करनी और न ही आज सेना में भर्ती होने का चाव हैं। वास्तव में, ये विचित्र स्थितियां पश्चिमी षड्यंत्र के तंत्र का अहम भाग है। विदेश जाने से गुरसिखों की एक मुश्त 'लैण्ड-होल्डिंग' जो मांझा, दो-आबा, मालवा क्षेत्रों में है, कम हो जायेगी। इससे राष्ट्र के सुरक्षा कवच में छेद हो जायेगा। साथ ही, विदेश जाने वाले अधपढ़े नौजवानों में से 90प्रतिशत का पतित होना तय है। विदेश जाकर भी कोई बड़ी नौकरी मिल जायेगी, ऐसा नहीं है। आई.टी.प्रोफेशनल जैसी स्थिति नहीं होने वाली। बस, नौकरी-चाकरी का ही काम हिस्से आता है। यानि, न खुदा ही मिला, न विसाले सनम। यह भी ईसाईयों के नव-धर्मान्तरण की पद्धति है। यह सम्पूर्ण राष्ट्र की सुरक्षा के लिए खतरा है।

पंजाब में, सबसे आश्चर्य की बात है-इस्लामिक सांस्कृतिक, जहादी बमबारी की सफलता। एक संगठित प्रयास के तहत पंजाब के सीमावर्ती क्षेत्रों में मुस्लिम आबादी बढ़ी है। यह सब तड़ित सी गति में अचानक हुआ है। कुछ मस्जिदों और मदरसों का निर्माण भी हुआ है। अमृतसर जिले में 'कांदियां सम्प्रदाय' की गतिविधियों पर गौर करें, तो पायेंगे कि भले ही ऊपर तौर पर यहां के जोड़-मेले शान्त नजर आते हों, परन्तु अन्दर की स्थिति किसी भू-गर्भीय ज्वालामुखी से कम नहीं है।

1978 से ही पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद के निशाने पर पंजाब राज्य रहा है। वह सिख मानस और 'सभ्याचार' को प्रभावित करना चाहता है। यह बात सर्वविदित है कि पाक समर्थित आतंकी पंजाब के नौजवानों को आतंकवाद के रास्ते पर लाना चाहते हैं। पाक आतंकियों की सांठ-गांठ खालिस्तानी आतंकियों से है ही। इन्टेलीजेन्स ब्यूरो भी सहमत है कि पंजाब में इस्लामिक शक्तियों द्वारा समर्थित आतंकी नेटवर्क मौजूद है। यह एक भयावह स्थिति है। धार्मिक व राजनैतिक नेतृत्व का इस स्थिति के विषय में मूक रहना, इसे और भयावह बना देता है।

सीमा पार पाकिस्तान से की गई स्मगलिंग केवल राष्ट्र के लिए राजस्व की हानि से सम्बद्ध विषय है,ऐसी बात नहीं। स्मगलिंग का तंत्र, यदाकदा आतंकवादियों के निष्कृष्ट कार्यों का साधन भी बनता है। पंजाब के सामाजिक ताने बाने को यह स्मगलिंग नेटवर्क छिन्न भिन्न कर रहा है। अत: स्मगलिंग इस्लामी आघातों के लिए एक अति उपयोगी औजार है।

तेहरान-ईरान के गुरुद्वारे में हर सप्ताह दर्जनों पतित सिख नवयुवक आते है, जो कबूतरबाजी का शिकार होते है। यह भटकाव इस्लामी नव-धर्मान्तरण नहीं, तो और क्या है? खाड़ी देशों में जाने वाले प्रवासी भारतीयों को छल के द्वारा न्यायालय द्वारा, मुल्ला द्वारा, सत्ता द्वारा मुसलमान बनने के लिए मजबूर किया जाता है। हाल में, पाकिस्तान में फांसी की सजा पाये सरबजीत सिंह द्वारा इस्लाम कबूल करने की घटना इस बात की पुष्टि करती है।

इस बात को समझना अति आवश्यक है कि माझा-दोआबा-मालवा की खेतिहर भूमि पर सिखों का एक मुश्त अधिकार पाकिस्तान की आंख की किरकिरी बन गया है। राष्ट्र की सुरक्षा का यह कवच, इतिहास के कई आंधी-तूफान देख चुका है। गुरुओं द्वारा प्रदत्त सुरक्षा कवच को येन-केन प्रकारेण तोड़ना, पाकिस्तान की सामरिक आवश्यकता है। यदि वह ऐसा करने में सफल होता है, तो हानि गुरसिख और गुरसिखी की ही होगी।

अत: गुरसिख विलक्षण जरूर बनें हैं। परन्तु बेगाने नहीं, स्वयं को भारत के सम्पूर्ण समाज का अंग मानते हैं। सिख अमृत छककर गुरु वाले जरुर बनें। पतित होकर देश-सिखी को बदनाम न करें। पश्चिमी देशों के आघातों के प्रति सतर्क हों। इस्लामी चुनौतियों का मुकाबला करें। गुरमत, गुरबाणी के प्रकाश में स्वयं को, अपने समाज को बचायें और राष्ट्र की सेवा करें। सिख नशे को सदा के लिए त्यागे। पाश्चात्य रीतियों से दूर ही रहें। विदेश जाने का भ्रम त्यागे। घर की समस्या का हल घर पर ही हो सकता है, विदेश में नहीं। पड़ोसी देश की गतिविधियां आशंकित करती है, तो घर के सजग प्रहरी बनें। ●